Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 38-43

भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान का अध्ययन

श्रीमती दीपशिखा शर्मा

शोध छात्रा, अर्थशास्त्र विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

डॉ. सुधीर पाठक

आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान का अध्ययन प्रस्तुत करता है। शिक्षा मानव को न केवल आय का स्रोत प्रदान करती है, अपितु मानव के सम्पूर्ण विकास में योगदान देती है। शिक्षा का स्तर बढने पर देश के नागरिकों की आय भी बढ़ती है, जो कि देश के आर्थिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रायः यह देखा गया है कि जिस देश में साक्षरता दर ऊंची है, उस देश का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर भी ऊंचा वर्तमान में प्रत्येक देश आर्थिक विकास को बढाना तथा जीवन स्तर को ऊंचा करना चाहता है। इसमें आय वृद्धि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने वाले कारकों में शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत देश में शिक्षा की आर्थिक विकास में भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु वर्ष 1951 से 2011 तक के दस वर्षीय आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिसमें साक्षरता दर का प्रति व्यक्ति आय पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत में साक्षरता दर तथा स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति शुद्ध घरेलू उत्पादन के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना तथा भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षा का प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

संकेताक्षर—*शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय, आर्थिक विकास, साक्षरता दर*

प्रस्तावना

शिक्षा देश के नागरिकों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का आधार है। प्रत्येक देश के आर्थिक विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने एवं जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिये प्रयासरत है। प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान शिक्षा का है। शिक्षा का एक राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। विदित है कि जिस देश में शिक्षा का स्तर ऊंचा है, उस देश में आर्थिक गतिविधियों का भी तेजी से विकास हुआ है। शिक्षा को मानव के नवीन तकनीकी और कौशल विकास के लिये महत्वपूर्ण कारक माना गया है। भारत देश में शिक्षा प्रणाली के तीन स्तर है जो कि प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा है। इसके अतिरिक्त तकनीकी शिक्षा भी है। भारत में 2020 में नवीन शिक्षा नीति की घोषणा भी की गई है। अरस्तू के अनुसार, "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शिक्षा के अभाव में मानव जीवन की कल्पना करना असंभव है। समाज व देश के विकास का उत्तरदायित्व परिवार पर आता है। वर्तमान में यह दायित्व विद्यालयों एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के कंधों पर आ गया है, लेकिन परिवार का महत्व कम नहीं हुआ। परिवार शिक्षा का प्रथम केन्द्र बिन्दु है।" भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को देश के सम्पूर्ण विकास के आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। भारत में प्राचीन काल में शिक्षा का प्रारम्भ वेदों से हुआ। वैदिक काल में शिक्षा गुरुकुल एवं आश्रमों के माध्यम

से दी जाती थी। इसके पश्चात बौद्धकालीन शिक्षा प्रारम्भ हुई। बौद्धकाल में शिक्षा को संस्थागत स्वरूप दिया गया था। बौद्ध मठों जैसे नालन्दा, तक्षशिला आदि शिक्षण संस्थान के रूप में थे। सन् 1835 में लार्ड मैकाले ने भारत में संभ्रान्त वर्ग को अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया। जी.एस.डी. त्यागी एवं पी.डी. पाठक (2007) सन् 1882 में भारत के गवर्नर जनरल लार्ड रिपन ने भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया। इसे हण्टर कमीशन भी कहा गया। हण्टर कमीशन के द्वारा पंजाब एवं इलाहाबाद दो विश्वविद्यालय स्थापित किये गये। इस आयोग द्वारा महिला शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना। जी.एस.डी. त्यागी एवं पी.डी. पाठक (2007) स्वतंत्रता के पश्चात भारत में समान शिक्षा नीति का निर्माण करने हेतु कोठारी आयोग गठित हुआ। दिनांक 24 जुलाई, 1968 को भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हुई, जिसमें कि 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गई। साथ ही उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के विकास पर बल दिया गया। सन् 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हुई, जिसमें शिक्षा को प्रत्येक स्तर के विकास को बढ़ावा दिया गया तथा नवोदय विद्यालय खोलने एवं कम्प्यूटर शिक्षा का विस्तार करने पर बल दिया गया। सुबह सिंह यादव, जे.पी. यादव, एच.एस. यादव (1991) नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 है, जिसमें शिक्षा पर देश की जी.डी.पी. के 6 प्रतिशत भाग का निवेश करने का लक्ष्य है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य छात्रों को तकनीकी, विज्ञान एवं अकादमिक क्षेत्रों में निपुणता प्रदान करना, छात्रों में नवाचार को बढ़ाना, छात्रों को विज्ञान एवं अकादमिक क्षेत्रों में निपुण बनाना तथा छात्रों में तार्किक निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाना तथा छात्रों में रचनात्मक विचारों में वृद्धि करना है। वर्तमान समय में प्रत्येक देश के आर्थिक विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कड़ी रही है। शिक्षा व्यक्ति को एक निपुण उत्पादक, एक प्रशिक्षित कारीगर, एक निपुण चिकित्सक, एक कुशल इंजीनियर एवं एक योग्य शासक आदि बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान युग तकनीकी युग है, जिसमें शिक्षा विश्व में मनुष्य को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। किसी भी देश का आर्थिक विकास उस देश में मौजूद शिक्षा के स्तर पर निर्भर करता है। भारत में जैसे-जैसे तकनीकी विकास होगा, वैसे-वैसे आय की असमानताएँ भी कम होंगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में शिक्षा को व्यवसाय की दृष्टि से देखा जाने लगा है, अर्थात् शिक्षा का व्यवसायीकरण हुआ है। भारत देश में शिक्षा पर व्यय सरकार द्वारा बढ़ाया जा रहा है, लेकिन जिस अनुपात में शिक्षा पर व्यय किया जा रहा है, उतनी शिक्षा में प्रगति नहीं हो पाई है। भारत के राज्यों में केरल राज्य एक ऐसा राज्य है, जहां शिक्षा का स्तर ऊंचा होने पर भी आर्थिक विकास का स्तर कम है। वहीं अगर पंजाब एवं हरियाणा पर दृष्टि डालें तो वहां आर्थिक विकास का स्तर तो ऊंचा है, लेकिन शिक्षा का उसकी तुलना में कम विकास हुआ है, क्योंकि शिक्षा के अलावा अन्य कई कारक हैं जो आर्थिक विकास पर प्रभाव डालते हैं। आर्थिक विकास में देश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि भी एक महत्वपूर्ण कारक है। जब कोई देश अपने देश में उपलब्ध प्राकृतिक, मानवीय आदि समस्त संसाधनों का कुशलता से उपयोग करता है तो उस देश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है तथा देश में मौजूद आय की असमानताएं भी दूर होती हैं।

शोध की आवश्यकता

भारतीय अर्थव्यवस्था एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। जैसे-जैसे भारत विकास की ओर अग्रसर हो रहा है, भारतीय अर्थव्यवस्था में द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) का योगदान बढ़ रहा है। वर्तमान में प्रत्येक देश आर्थिक विकास की समस्या का सामना कर रहा है। प्रत्येक देश अपनी आर्थिक स्थिति अन्य देशों की तुलना में बेहतर बनाना चाहता है। वर्तमान समय में प्रत्येक देश के विकास का मूल आधार शिक्षा है। अतः प्रस्तुत अध्ययन से पूर्व भी वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित अनेक विषयों पर शोध हुए हैं, लेकिन फिर भी बदलते समय में शिक्षा के आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है, ताकि इस अध्ययन से नवीन तथ्य प्राप्त हो सके तथा पूर्व में प्राप्त तथ्यों में सुधार हो सके, जो कि देश के आर्थिक विकास से सम्बन्धित नीतियों के निर्माण में योगदान दे सके। साथ ही आगे शोध अध्ययन के लिये आधार प्रदान कर सके।

अध्ययन के उद्देश्य—प्रस्तुत शोध पत्र भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान में निम्नलिखित उद्देश्य रखे गये हैं—

- भारत में साक्षरता दर तथा स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति शुद्ध घरेलू उत्पादन के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।

- भारत में शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
- भारत में प्रति व्यक्ति आय की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना—साक्षरता दर एवं प्रति व्यक्ति आय के बीच सहसम्बन्ध है।

साहित्यावलोकन

कैथरीन ग्रान्ट (2017) ने अपने शोध पत्र "कॉन्ट्रीब्यूशन ऑफ एज्यूकेशन टू इकानोमिक ग्रोथ" में शिक्षा के एक देश की आर्थिक वृद्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने वर्ष 1971 से 2010 की अवधि में कोरिया, ट्यूनिशिया, कोलम्बिया, घाना, कोंगों इन पांच देशों की प्रति व्यक्ति आय एवं माध्यमिक शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण किया। इन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि माध्यमिक शिक्षा में निवेश आर्थिक विकास को बढ़ाता है तथा मानव पूंजी को मजबूत बनाकर ही देश के नागरिकों को गरीबी से बाहर निकाला जा सकता है।

जी.एस.डी. त्यागी एवं पी.डी. पाठक (2007) ने अपनी पुस्तक "भारतीय शिक्षा की सम सामयिक समस्याएँ" में शिक्षा के देश के विकास एवं जनसंख्या नियंत्रण में योगदान का प्रस्तुतीकरण किया। इस पुस्तक में यह पाया कि सातवीं पंचवर्षीय योजना में प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा पर बल दिया गया। साथ ही यह पाया कि शिक्षा आर्थिक एवं मानवीय विकास में सकारात्मक योगदान देती है।

डॉ. राजीव कुमार (2009) ने अपनी पुस्तक "आर्थिक समृद्धि" में शिक्षा एवं देश की आर्थिक वृद्धि के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण किया। इन्होंने ये पाया कि प्रदेश के आर्थिक विकास के लिये तकनीकी शिक्षा का विस्तार आवश्यक है। मानव का शिक्षित एवं कार्यकुशल होना भारत के आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान देता है।

इल्हान ओजटर्क (2001) ने अपने अध्ययन "दो रोल ऑफ एज्यूकेशन इन इकॉनामिक डवलपमेंट : ए थ्योरटीकल पर्सपेक्टिव" में यह पाया कि 19वीं शताब्दी से पूर्व शिक्षा पर व्यय बहुत कम होता था, 20 वीं शताब्दी में व्यक्तियों की आय में वृद्धि करने वाले महत्वपूर्ण कारक के रूप में इसे स्वीकार किया गया। इन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि आर्थिक विकास शिक्षा के स्तर में वृद्धि किये बिना संभव नहीं है।

चक्रवर्ती के.एस. एण्ड कृष्णनकुट्टी, रवीश (2012) ने अपने अध्ययन "एज्यूकेशन एण्ड इकॉनामिक ग्रोथ इन इण्डिया" में शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय एवं देश की आर्थिक वृद्धि के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने अध्ययन में वर्ष 2004-05 से 2010-11 की अवधि में साधन लागत पर स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति विशुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद तथा साधन लागत पर स्थिर कीमतों पर विशुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद पर शिक्षा पर व्यय के प्रभाव का विश्लेषण किया। इन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षा पर व्यय का आर्थिक वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पडा।

जी. जर्मिनल एवं तालेब दा कोस्टा, मर्चेला (2021) ने अपने अध्ययन "इन इकॉनामैट्रिक स्टडी ऑफ दा इम्पैक्ट ऑफ एज्यूकेशन ऑन दा इकॉनामिक डवलपमेन्ट ऑफ लो इन्कम कन्ट्रीज" में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कम आय वाले देशों में आर्थिक विकास के तीन महत्वपूर्ण कारकों प्रति व्यक्ति आय, रोजगार एवं मानव संसाधन पर शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

वमन, एस. देसाई. (2012) ने अपने शोध पत्र "इम्पोरटैन्स ऑफ लिटरेसी इन इण्डियाज इकॉनॉमिक ग्रोथ" में शिक्षा का भारत की आर्थिक वृद्धि पर प्रभाव जानने का प्रयास किया। इन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि एक देश की आर्थिक वृद्धि के लिये मानव पूंजी के बेहतर उपयोग हेतु श्रमिकों का साक्षर होना एवं तकनीकी रूप से कार्यकुशल होना बहुत आवश्यक है।

एमिल चेन (2014) ने अपने शोध अध्ययन में शिक्षा एवं आर्थिक वृद्धि के सम्बन्ध का विश्लेषण किया। इन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि आर्थिक वृद्धि प्राप्त करने के लिये विद्यालय प्रक्रिया को और अधिक सुधार लाना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा एक देश की आर्थिक वृद्धि का महत्वपूर्ण कारक है।

उपर्युक्त साहित्यावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा एवं आर्थिक विकास एक दूसरे से सम्बन्धित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षा की आर्थिक विकास में भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का क्षेत्र सम्पूर्ण भारत देश है। अध्ययन हेतु वर्ष 1951 से 2011 तक के दस वर्षीय आंकडों का प्रयोग किया गया है। यह शोध द्वितीयक समंकों

ISSN 2348-3857

पर आधारित है। इन समंकों के संकलन हेतु रिजर्व बैंक की वेबसाइट, अन्य केन्द्र सरकार की रिपोर्ट एवं वेवसाईटों पर उपलब्ध समंकों एवं योजना आयोग की रिपोर्टों, विभिन्न वर्षों की आर्थिक समीक्षा आदि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में साक्षरता दर एवं प्रति व्यक्ति आय के द्वितीयक समंकों के बीच सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिये सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है। साथ ही निर्धारण गुणांक का प्रयोग किया गया है। परिकल्पना परीक्षण के लिये तथा दोनों चरों के बीच सहसम्बन्ध की सार्थकता की जाँच के लिये टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शिक्षा के आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिये ग्राफ एवं चार्ट के द्वारा साक्षरता दर एवं प्रति व्यक्ति आय के बीच सम्बन्ध को प्रदर्शित किया गया है।

शिक्षा एवं आय की प्रवृत्तियां एवं शिक्षा एवं आय के सम्बन्ध का विश्लेषण

देश के आर्थिक विकास के लिये उस देश की उत्पादन शक्ति का मजबूत होना आवश्यक है। यह तभी मजबूत होगी जब उस देश के नागरिक शिक्षित होंगे। शिक्षा के स्तर को निर्धारित करने वाले कारकों में साक्षरता दर एक महत्वपूर्ण कारक है। भारत में साक्षरता दर की 1951 से 2011 की अवधि में स्थिति निम्न तालिका-1 से स्पष्ट है—

तालिका 1 : भारत में साक्षरता दर एवं स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय

वर्ष	साक्षरता दर (%)	स्थिर भावों के आधार पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (रु. में)
1951	18.3	12493
1961	28.3	16004
1971	34.45	18702
1981	43.57	19925
1991	52.21	27319
2001	64.83	38515
2011	72.98	62170

स्रोत—आर्थिक समीक्षा 2022-23

उपर्युक्त तालिका 1 में आर्थिक समीक्षा 2022-23 एवं यू.एन.डी.पी. से प्राप्त द्वितीयक समंकों को प्रदर्शित किया गया है। तालिका 1 के प्रथम स्तम्भ में 1951 से 2011 तक की दस वर्षीय अवधि दर्शायी गई है तथा दूसरे स्तम्भ में दस वर्षीय साक्षरता दर प्रदर्शित है। उपर्युक्त तालिका 1 से स्पष्ट है कि भारत में साक्षरता दर में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष 1951 में भारत में साक्षरता दर 18.3 प्रतिशत थी, जो वर्ष 1961 में बढ़कर 28.3 प्रतिशत हो गई। वर्ष 1971 में यह बढ़कर 34.45 प्रतिशत हो गई, वर्ष 1981 में साक्षरता दर 43.57 प्रतिशत, 1991 में 52.21 प्रतिशत, 2001 में 64.83 प्रतिशत तथा वर्ष 2011 में 72.98 प्रतिशत हो गई। साक्षरता दर की यह प्रवृत्ति निम्न रेखाचित्र-1 से स्पष्ट है—

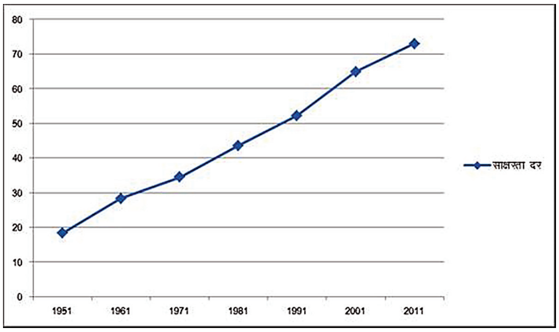

रेखाचित्र 1 : भारत में प्रति व्यक्ति आय साक्षरता दर की प्रवृत्ति

उपर्युक्त रेखाचित्र-1 से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 2011 तक की अवधि में साक्षरता दर में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

तालिका-1 में तृतीय स्तम्भ में स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय प्रदर्शित है। वर्ष 1951 में भारत में स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय 12493 रुपये थी, जो कि 1961 में बढ़कर 16004 रुपये हो गई तथा वर्ष 1971 में यह 18702 रुपये थी, जो कि वर्ष 1981 में 19925 रुपये, वर्ष 1991 में 27319 रुपये, वर्ष 2001 में 38515 रुपये थी, जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 62170 रुपये हो गई। इस प्रकार वर्ष 1951 से 2011 तक भारत में स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय में लगातार वृद्धि हो रही है। प्रति व्यक्ति आय की यह प्रवृत्ति निम्न रेखाचित्र-2 से प्रदर्शित है।

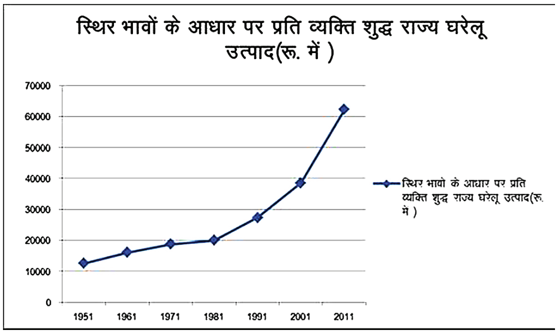

रेखाचित्र 2 : भारत में प्रति व्यक्ति आय की प्रवृत्ति

उपर्युक्त रेखाचित्र-2 से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 2011 तक की अवधि में स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति रही है।

शिक्षा का आय पर प्रभाव

भारत में 1951 से 2011 की अवधि में साक्षरता दर एवं स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय के बीच प्रवृत्ति को निम्न रेखाचित्र-3 में प्रदर्शित किया गया है।

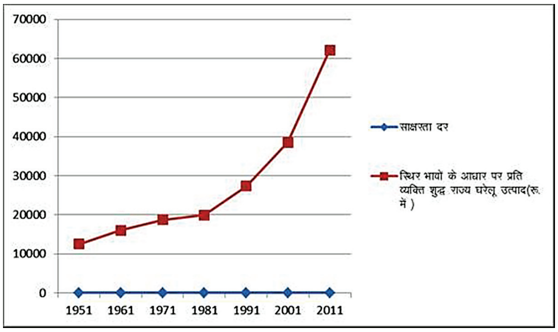

रेखाचित्र 3 : भारत में प्रति व्यक्ति आय साक्षरता दर की प्रवृत्ति

उपर्युक्त रेखाचित्र-3 से यह स्पष्ट है कि जैसे-जैसे साक्षरता दर बढ़ रही है, वैसे-वैसे स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय भी बढ़ रही है। अर्थात् साक्षरता दर तथा स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय के बीच धनात्मक सम्बन्ध है। साक्षरता अनुपात एवं स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय के बीच सम्बन्ध की जांच के लिये सहसम्बन्ध गुणांक तालिका 1 में प्रदर्शित आँकड़ों के आधार पर आंकलित किया गया है। साथ ही इन दोनों चरों के बीच निर्धारण गुणांक को ज्ञात किया गया है। साक्षरता दर एवं स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के बीच सहसम्बन्ध की सार्थकता के परीक्षण हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। पांच प्रतिशत साक्षरता स्तर पर परिकल्पना परीक्षण के लिये निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया तथा परीक्षण किया गया है—

शून्य परिकल्पना—साक्षरता दर तथा स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति आय के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना—साक्षरता दर तथा स्थिर कीमत पर प्रति व्यक्ति आय के बीच सार्थक सहसम्बन्ध है।

परीक्षण परिणाम

$$T_{cal} = 5.09$$

स्वतंत्रता की कोटि (d.f)=5

$$T_{0.05} = 2.57$$

$$T_{cal} > T_{0.05}$$

अतः यहां शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इस प्रकार साक्षरता दर एवं स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय के बीच सहसम्बन्ध सार्थक है। तालिका-1 में प्रदर्शित आँकड़ों का विश्लेषण निम्न तालिका-2 में स्पष्ट है—

तालिका 2 : विश्लेषण

क्र. सं.	चरों के बीच सहसंबंध	सहसंबंध की मात्रा व निर्धारण गुणांक	T-परीक्षण व सार्थकता परिणाम
1	2	3	4
1	साक्षरता दर तथा स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद के बीच सहसंबंध	r=+.92	T_{cal} = 5.09 स्वतंत्रता की कोटि (d.f)=5 T0.05=2.57 $T_{cal} > T_{0.05}$ अतः यहां शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

1	2	3	4
	साक्षरता दर तथा स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद के बीच निर्धारण गुणांक	r^2=.85	अतः साक्षरता अनुपात और स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद के बीच सहसंबंध सार्थक है।

तालिका-2 से स्पष्ट है कि साक्षरता दर एवं स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय के बीच उच्च श्रेणी का धनात्मक सहसम्बन्ध है। साथ ही टी-परीक्षण में टी के सारणी मूल्य से टी का परिगणित मूल्य अधिक होने से यह स्पष्ट होता है कि 5 प्रतिशत सार्थकता पर दोनों चरों के बीच सहसम्बन्ध सार्थक है। इन दोनों चरों के बीच सहसम्बन्ध $r = +.92$ है तथा निर्धारण गुणांक r^2=.85 है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि भारत में स्वतंत्रता के पश्चात 1951 से 2011 तक की अवधि में शिक्षा के स्तर में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गई। साथ ही इसके परिणामस्वरूप आय के स्तर में भी लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गई है। शिक्षा का देश के आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे साक्षरता दर बढ रही है, वैसे-वैसे प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय भी बढ़ रही है। मानव पूंजी को मजबूत बनाकर ही देश को गरीबी से बाहर निकाला जा सकता है। भारत देश में शिक्षित मानव का भारत के आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान है।

भारत में शिक्षा के स्तर में सुधार के लिये शिक्षा पर व्यय में वृद्धि किया जाना आवश्यक है। शिक्षा रोजगारोन्मुख होगी तो नागरिकों की आय में वृद्धि होगी। अतः शिक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच धनात्मक एवं गहरा सम्बन्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्यागी, जी.एस.डी. एवं पाठक, पी.डी., भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, षष्ठ संस्करण-2007, पृ.सं. 365-396
2. यादव, सुबह सिंह एवं अन्य, भारतीय शिक्षा : प्रवृत्तियाँ एवं आयाम, पोईन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण 1991, पृ.सं. 150-155
3. कुमार, राजीव, आर्थिक समृद्धि, अर्जुन पुस्तक पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृ.सं. 6-15
4. ग्रेन्ट कैथरीन, दा कन्ट्रीब्यूशन ऑफ एज्यूकेशन टू इकोनोमिक ग्रोथ, नॉलेज एविडैन्स एण्ड लर्निंग फॉर डवलपमेन्ट, 2017, पृ.सं. 1-25
5. ओजटर्क, इल्हान, दा रोल ऑफ एज्यूकेशन इन इकोनोमिक डवलपमेन्ट : ए थ्योरिटीकल पर्सपेक्टिव, एम.पी.आर.ए. (MPRA) पेपर न. 9023, जर्नल ऑफ रूरल डवलपमेन्ट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, वॉल्यूम- XXXIII, न. 1, 2001, पृ.सं. 39-47
6. चक्रवर्ती, के.एस. एवं अन्य, एज्यूकेशन एण्ड इकोनोमिक ग्रोथ इन इण्डिया, एम.पी.आर.ए. पेपर न. 48524, 2012, पृ.सं. 1-10 ऑनलाइन एचटीटीपीः//एमपीआरए डॉट यूबी डॉट यूनी-एमयूईएनसीएचईएन डॉट डीईई/48524/
7. जर्मिनल जी. एवं अन्य, एन इकोनोमैट्रिक स्टीड ऑफ दा इम्पैक्ट ऑफ एज्यूकेशन ऑन दा इकोनोमिक डबलपमेन्ट ऑफ लो इनकम कन्ट्रीज, एम.पी.आर.ए. पेपर न.-107729 पृ.सं. 1-24, 2021 ऑनलाइन एचटीटीपीः//एमपीआरए डॉट यूबी डॉट यूनी-एमयूईएनसीएचईएन डॉट डीईई/107729/
8. देसाई, वमन एस., इम्पोर्टेन्स ऑफ लिटरेसी इन इण्डियाज इकोनॉमिक ग्रोथ, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनोमिक रिसर्च (आई.जे.ई.आर.), मार्च-अप्रैल 2012, वी 312, पृ.सं. 112-124
9. चैन, एमिल, दा इम्पैक्ट ऑफ एज्यूकेशन ऑन इकोनोमिक ग्रोथ, थीसीज, लीथोनार्ड एन. स्टैम स्कूल ऑफ बिजनेस, न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी, मई-2014, पृ.सं. 1-4